Relevance of Buddha Philosophy
बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता

Chandra Sohan Singh
चन्द्रसोहन सिंह
शोध छात्र
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया.

Received Jan. 14, 2018 Accepted Feb. 19, 2018

किसी ऐतिहासिक महापुरूष की तुलना पौराणिक देवी देवताओं से करना ठीक नहीं है, पर यदि पौराणिक शब्दावली को इस्तेमाल करें, तो हम कह सकते है, कि, बुद्ध सोलह कलापूर्ण पुरूष थे। हमारे देश को भी बड़े–बड़े महापुरूषों को पैदा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पर, बुद्ध को जैसा पूर्ण देखा जाता है, वैसे नहीं मिलेंगे, महापुरूषों में कितने ही मस्तिष्क में बहुत बड़े मिलेंगे, जिनकी प्रतिभा दूर तक बेधने वाली, दूर तक सोचने वाली है। पर हृदय के माधुर्य में वह उतने बड़े नही निकलेंगे। बुद्ध हृदय और मस्तिष्क दोनो के महान थे। पश्चिमी विद्वानों ने जब पहले पहल बुद्ध के बारे में सुना और जाना, तो कितनों ही ने उन्हें हिन्दुओं के अवतार की तरह एक कल्पना समझा। पर, अन्त में ठोस ऐतिहासिक तथ्यों के सामने सिर झुकाना पड़ा और बुद्ध की ऐतिहासिकता माननी पड़ी।

आधुनिक युग में उनके अहिंसा, पंचशील और सदाचार पर जोर देने की बातों को लेकर कितने ही लोगों ने उन्हें आचार शास्त्र का आचार्य माना है। इसमें शक नहीं उनके उपदेशों में से दोनो चीजें मौजूद है। दार्शनिक तौर पर उनका और उनके अपुयायियों का बहुत ऊँचा स्थान रहा है। बुद्ध के दर्शन के तीन महा वाक्य हैः– अनित्य, दुःख, अनात्मा, उसी तरह जैसे वेदान्त के सत् चित् आनन्द और दोनो दर्शन एक दूसरे के पूरे विरोधी है, यह उनके इन तीन वाक्यों की तुलना करने से ही मालूम हो जायेगा। अनित्यवाद का बुद्ध पर बहुत जोर है, और एक तरह हम कह सकते हैं बौद्ध दर्शन की यही आधार–शिला है।

बुद्ध का प्रमुख प्रहार उपनिषद दर्शन पर था, यह तो इसी से मालूम है कि उपनिषद के आत्म–तत्व की जगह उन्होनें दर्शन में अनात्मा का प्रतिपादन किया। अनात्मा से मतलब आत्मा का अभाव मात्र नहीं था, बल्कि वह इस शब्द से यह बतलाना चाहते थे कि चाहे भीतरी–बाहरी किसी संसार या पदार्थ को देखा भी जाये, कहीं पर उपनिषद प्रतिपादित आत्मा जैसे सनातन तत्व का अस्तित्व नहीं मिलता। सभी पदार्थ बाहर से भीतर तक सतत परिवर्तनशील है और यह परिवर्तन ऊपरी नहीं होता, बल्कि जड़ मूल में एक वस्तु को नाश कर छण भर के लिए दूसरी वस्तु को ला रखता है। इस तरह देश और काल में यह परिवर्तन सदा से होता आ रहा है और सदा होता रहेगा।

महात्मा बुद्ध ने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों में किसी भी दार्शनिक तत्व का विवेचन या प्रतिपादन नहीं किया है। उनका कहना था कि, ''मैं पुरातन काल से चले आ रहे धर्म की स्थापना मात्र कर रहा हूँ।'' यह सब कुछ होते हुए बौद्ध धर्म के आधार स्वरूप जिन तत्वों का प्रतिपादन किया गया उनमें निहित विचारों द्वारा हमें अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों का परिचय मिलता है।

बुद्ध का दर्शन प्रतीत्य समुत्पादवार– अन्तः वाह्य जगत की सभी स्थल सूक्ष्म वस्तुएँ बिना अपवाद के नाशवान, अनित्य, क्षण–क्षण जड़–मूल से परिवर्तनशील है। इसका समझना आसान नहीं था। पर, बुद्ध के कहने का ढंग ऐसा सरल था, हर गाँठ को खोलने के लिए ऐसी उपमायें देते, कि थोड़ी बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी उसे अच्छी तरह समझ जाता।

आज बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता इस बात से सिद्ध हो रही है कि भारतीय धर्म चिन्तन, दर्शन और संस्कृति को बौद्ध धर्म की अभूतपूर्व देन है। जिसने प्रज्ञा और ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न कर दी। ज्ञान और दर्शन की दिशा में इसने विश्व को भी प्रभावित किया है, तथा अपनी नवीन चिन्तन पद्धति से उसे आकृष्ट किया है। बौद्ध दर्शन ने भारतीय जन मानस को सर्वप्रिय धर्म प्रदान किया है, जिसमें नैतिक आचरण और सच्चरित्रता थी तथा आडम्बर और कर्मकाण्ड का अभाव था। इसके समस्त उपदेश जनभाषा पाली में दिये गये थे, जिससे अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हुए।

बौद्ध भिक्षु निःस्वार्थ भाव से धर्म प्रचार–प्रसार में संलग्न रहते थे और जनता के कष्टों को दूर करने का प्रयास करते थे। भारतीय समाज में निःस्वार्थ सेवा–भावना और धर्म भावना का प्रारम्भ बौद्ध धर्म एवं दर्शन ने ही किया था। पुरानी व्यवस्था में जाति या जन्म के ख्याल से छोटा बड़ा माना जाता था। बुद्ध ने उसकी जगह भिक्षु होने के काल को मुख्य रखा। भिक्षुओं में परस्पर सौहार्द और सौजन्य से रहने की भावना बीज बौद्ध ने ही बपन किया था। बौद्ध दर्शन स्थिरता के दर्शन से उल्टा है। जब विश्व में स्थिरता नाम की कोई चीज है ही नहीं बल्कि प्राकृतिक नियमों के कारण हर एक वस्तु–घटना जड़–मूल से परिवर्तित होने के लिए मजबूर है, तो विश्व में परिवर्तन करने वाली गतिकारक शक्ति की आवश्यक्ता नहीं है। पदार्थों का अपना रूप ही गति देने के लिए पर्याप्त है।

बुद्ध के इस तरह के क्रांतिकारी दर्शन ने यदि ऐसी विचार धारा को जन्म दिया, जो हर तरह के उथल–पुथल का स्वागत करने के लिए तैयार थी, तो कोई आश्चर्य नहीं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद–ईश्वरी – प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन
2. मिश्र, डा0 जयशंकर– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास
3. सांकृत्यान, महापंडित राहुल– महामानव बुद्ध
4. इन्टरनेट– प्रभातखबर.कामॅ